B.A. History Hon's, Part: I

Paper: I, Unit: V, Date: 3.12.2020

Lession: सिन्ध पर अरबों के आक्रमण

सिन्ध पर अरबों के आक्रमण के समय सिन्ध राजनीतिक परिवर्तनों और आंतरिक कलह की वजह से काफी कमजोर हो गया था। उस समय के लोगों में सामाजिक एकता भी नहीं थी। उसके अतिरिक्त दाहिर भी काफी बदनाम हो गया था क्योंकि उसके पिता ने सिंहासन बलपूर्वक प्राप्त किया था। उसी समय की महानता शक्ति से लोहा लेना पड़ा था। एक लम्बे समय से भारत और अरब के बीच वाणिज्य सम्बन्ध थे। अरबों द्वारा इस्लाम धर्म स्वीकार करने में पहले व्यापार के पश्चिमी तट पर आते थे और वहाँ उन्हें अच्छा सत्कार भी मिलता था। भारतीयों में 7वीं सदी के पश्चात भी कोई परिवर्तन नहीं आया। अरबों की प्रकृति में फर्क आ गया था जिसका मुख्य कारण धर्म था।

अरबों की महत्वाकांक्षा ने भी सिन्ध आक्रमण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी महत्वाकांक्षा के कारण उन्होंने सीरिया, मेसोपोटामिया, अर्मेनिया, ईरान, बलूचिस्तान, अफ्रीका का सम्पूर्ण उत्तरी तट तथा ऊपरी और निचले मिस्त्र, स्पेन, पुर्तगाल और दक्षिणी फ्रांस का हिस्सा अपने अधिकार में कर लिया। राजनैतिक महत्वाकांक्षा के साथ-साथ आर्थिक कारण भी काफी महत्व था। अरब लूट के माल द्वारा समृद्ध होना चाहते थे।

धार्मिक उत्साह के कारण अरबों ने सिन्ध पर आक्रमण किया। सिन्ध आक्रमण की पृष्ठभूमि में इस्लाम धर्म का बहुत बड़ा हाथ रहा है, यद्यपि विद्वानों ने इस तथ्य को दृष्टि ओझल किया है। एक महत्वपूर्ण कारण यह भी माना जाता है कि लंका का सम्राट ने जहाज द्वारा धन तथा औरतें ईराक भेजी थी, परन्तु सिन्धी समुद्री डाकुओं ने ही भारतीय समुद्र तट पर उस जहाज को लूट लिया। अलहल्लाज ने दाहिर से लूट का माल वापस माँगा। प्रभु दाहिर के राज्य के नहीं थे और उन्हें दण्डित करना उसके हाथ में नहीं था। उसने हज्जाज से अपनी असमर्थता प्रकट की। उसने दाहिर ने उसे भी हरा दिया। दाहिर की इन सफलताओं से क्रुद्ध होकर हज्जाज ने अपने सबसे योग्य एवं वीर सेनापति मुहम्मद बिन-कासिम को भेजा।

करीब 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम 50 हजार सैनिकों की विशाल सेना लेकर शिराज और मकरान के रास्ते से होता हुआ सिन्ध पहुँचा और उसने सबसे पहले देवल के बन्दरगाह पर सफलतापूर्वक अधिकार कर लिया। वहाँ अपना अधिकार प्राप्त कर वहाँ के निवासियों को इस्लाम धर्म कबूल करने पर बाध्य किया तथा आज्ञा का पालन नहीं होने पर कत्लेआम करवा दिया। देवल पर अधिकार प्राप्त होने के बाद मुहम्मद-बिन-कासिम निरुन पहुँचा और उस पर आसानी से कब्जा कर लिया। अन्त में आक्रमणकारियों ने ब्राह्मणाबाद और अरोर पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार सिन्ध विजय के बाद मुहम्मद-बिन-कासिम ने मुलतान पर विजय प्राप्त की।

सिन्ध पर अरबों की विजय के कारण: एकता का अभाव सर्वप्रथम तो सिन्ध आंतरिक रूप से छिन्न-भिन्न हो गया था। वहाँ की राजनीतिक एकता समाप्त हो चुकी थी। सिन्ध में उस समय कई जातियाँ तथा धर्मों के निवासी थे जिनमें आपसी सद्भाव नहीं था। इस वजह से वहाँ के लोगों ने अपना शासक के विरुद्ध आक्रमणकारियों की सहायता

की आलोकप्रियता: अरब के विजय का एक प्रमुख कारण यह था कि सिन्ध के अपनी प्रजा में लोकप्रिय नहीं था। प्रजा और शासक के बीच किसी प्रकार सद्भावना नहीं रह गयी थी। दाहिर के शासन आस-पास अर्ध स्वतंत्र हो गये थे।
हिन्दुओं का विश्व मैत्री का सिद्धांत: हिन्दु लोग धार्मिक दृष्टि से अति सहिष्णु थे। उन्होंने दूसरे धर्म के लोगों को साथ मैत्री भाव अपनाया, उनका सोच इस्लाम के मध्य में काफी प्रचार है परन्तु वे तटस्थ रहे और देश पर आये संकट को मौन दर्शक के भाँति देखते थे। सिन्ध प्रान्त तब बहुत गरीब था, जब दरिद्रता की वजह से यह सम्भव नहीं था कि विशाल संगठन और सुसज्जित सेना रख सके।
सिन्ध का देश के अन्य भागों से अलग होना: सिन्ध प्रान्त कई दिनों से शेष भारत से अलग था। इसके अलावे देश में कई छोटे राज्य थे जो अपने-अपने भागों में ही उलझ रखे थे।
आक्रमणकारी सेना की उत्तमता: दाहिर की सेना के तुलना में अरब सेना उत्तम थी। आक्रमणकारी सेना नवीन युद्ध औजारों के साथ सुसज्जित तथा उचित नेतृत्व के अधीन थी जबकि भारतीय सेना का नेतृत्व कमजोर था अस्त्र-शस्त्र भी प्राचीन था।
धार्मिक आदर्श: अरब में यह भावना विद्यमान थी कि अल्लाह ने उन्हें इस्लाम प्रचार प्रसार के लिए प्रतिनिधि के रूप में भेजा है। जबकि सिन्ध के लोगों में किसी प्रकार की धार्मिक आदेश नहीं था।
राजा की कमजोरी: अरब के विजय का सबसे महत्वपूर्ण कारण यह था कि सिन्ध राजा का शासक दाहिर अयोग्य एवं दुर्बल था। उसने सेना का नेतृत्व करने के स्थान एक सिपाही की भाँति युद्ध में भाग लिया। अतः उन्होंने परिस्थिति के अनुसार समझौते की नीति का अनुसरण किया और हिन्दुओं को अपना धर्म मानने की स्वतंत्रता दे दी। अरबों द्वारा हिन्दुओं को दी गई छूट के बाद के मुसलमानों के लिए नियम बन गया।
अरब आक्रमण का प्रभाव: अरबों की सिन्ध विजय भारत तथा इस्लाम के इतिहास में कथा की परिणामहीन विजय थी। यहाँ तक की राजनीतिक के क्षेत्र में भी भारतीयों ने अरबों से कोई पाठ नहीं पढ़ा। उन्होंने अरबों को भगाने का प्रयत्न किया और न ही सीमा सुरक्षा का प्रबन्ध। सांस्कृतिक क्षेत्र में भी अरब लोग ही भारतीयों से प्रभावित हुए। उन्होंने कई संस्कृत पुस्तकों जैसे - ब्रह्मसिद्धान्त, खण्डखाद्यक का अरबों में भी अनुवाद करवाया। चित्रकला, भवन-निर्माण कला, विद्या, दर्शन आदि भी अरबों ने भारतीयों से सीखा।

इस प्रकार इस निष्कर्ष के रूप में अरबों की सिन्ध-विजय चिरस्थायी नहीं रह सकी और न ही अरबों का किसी भी क्षेत्र में किसी भी प्रकृति का कोई प्रभाव पड़ा। ज्ञात अनुभव के आधार पर स्टानली लेनपुल तथा बूज्जले हेग आदि विद्वानों के साथ अरब की विजय भारत तथा इस्लाम के इतिहास में एक क्षण मात्र थी और एक परिणामहीन विजय था।

डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर